RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.-०११/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 28
सृष्टि संवत 1960853116
11 अक्तूबर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-72, अंक : 28, 8/11 अक्तूबर 2015 तदनुसार 26 आश्विन सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तेरी शरण सबसे अच्छी है

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

अयमग्ने जरिता त्वे अभूदपि सहसः सूनो नह्य न्यदस्त्याप्यम्।
भद्रं हि शर्म त्रिवरूथमस्ति त आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि।।

-ऋ० १०।१४२।१

शब्दार्थ-हे-अग्ने-सबको प्रकाश देने वाले। **अयम्**-यह **जरिता**-स्तोता **त्वे+अपि**-तेरे ही सहारे **अभूत्**-रहता है। **हे सहसः+सूनो**-बलियों को झुका देने वाले। **हि**-क्योंकि **अन्यत्**-तुझसे भिन्न अन्य **आप्यम्**-प्राप्तव्य, या सम्बन्धी **न**-नहीं **अस्ति**-है **हि**-सचमुच **ते**-तेरी **शर्म**-शरण **भद्रम्**-भली और **त्रिवरूथम्**-तीनों में श्रेष्ठ **अस्ति**-है, अतः **हिंसानाम्**-हिंसकों के **विद्युम्**-वज्र को हमसे **आरे+अप+कृधि**-बहुत दूर कर दे।

व्याख्या-आश्रयार्थी समस्त संसार में घूम आया है। उसे अपेक्षित आश्रम मिला भी, थोड़े समय के पश्चात् उसमें उसे दोष दिखाई दिया। निर्दोष आश्रय की अभिलाषा से वह उसने छोड़ दिया। इस प्रकार सारा संसार उसने खोज डाला है। उसे बन्धु-बान्धव, मित्र, कलत्र, पुत्र, पिता सभी स्वार्थ के पुतले दिख पड़े, अतः आर्त्त स्वर में कहता है-**'अयमग्ने जरिता त्वे अभूदपि सहसः सूनो नह्यन्यदस्त्याप्यम्'** प्रभो! यह भक्त तेरे ही सहारे हो गया है (रहता है)। बलवानों को झुकाने वाले! तेरे बिना और कुछ प्राप्तव्य नहीं और कोई सम्बन्धी नहीं। सच है। भगवान् ही सच्चा सखा, बन्धु, माता-पिता है-**'स नो बन्धुर्जनिता स विधाता'** (यजु. ३२।१०) वही प्रभु हमारा बन्धु, जनिता (माता-पिता) है और वही विधाता (जगन्निर्माता-सब जगत् का बनाने वाला) है।

वह प्रबलों में प्रबल है, उससे अधिक प्रबल कोई नहीं है। उसकी शक्ति के सामने सब मन्द पड़ जाते हैं। वह सर्वशक्तिमान् है। सर्वशक्तिमान्, सर्वगुणनिधान भगवान मिल जाए तो और चाहिए ही क्या ? आश्रय खोजते-खोजते मिल गया सर्वाश्रय, सर्वाधार। सारे सहारे देखे थे, उनके गुण-अवगुण का ज्ञान है। जब यह मिला तो भक्त के मुख से निकला-**'भद्रं हि शर्म त्रिवरूथमस्ति ते'** तेरी शरण तो सचमुच तीनों में श्रेष्ठ है। एक शरण जड़ प्रकृति की है। उससे तो जीव उतना पाता नहीं, जितना गंवाता है। चेतन जीव जब जड़ प्रकृति का शरणार्थी होना चाहता है तो समझ लो कि यह पहले बहुत कुछ गंवा चुका है। विवेकशील जीव को इतना विवेक नहीं रहा कि मैं स्वामी हूं और यह स्व है। वह भूल गया कि चेतन की अपेक्षा जड़ हीन होता है, जड़ तो स्वयं कोई क्रिया भी नहीं कर सकता, उसमें तो क्रिया, चेष्टा, गति का आधार चेतन ही करता है, अतः जड़ की शरण तो मरण है। दूसरी शरण जीवों की है। जीव उसके समान चेतन अवश्य है। जड़ प्रकाश रहित प्रकृति की अपेक्षा अवश्य उत्कृष्ट है। सन्ध्या-मन्त्र में ही जीव को प्रकृति से श्रेष्ठ कहा है-

'उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्'-अन्धकारमयी प्रकृति से ऊपर उठकर उससे श्रेष्ठ आत्म प्रकाश के दर्शन करने हैं।

किन्तु जीव के ज्ञानादि गुणों में तारतम्य है। एक-से-एक उत्कृष्ट दिखता है। जीव एक की शरण लेता है, उसकी अपेक्षा दूसरे का उत्कर्ष ज्ञात होने पर उसे छोड़ देता है। अन्त में वहां से भी अपना मनोरथ मिलता न देख शरणान्तर की तलाश करता है।

तीसरी शरण जगद्विधाता परमात्मा-प्रकृति तथा जीव के अधिष्ठाता की है। उसके प्राप्त होते ही सब उपद्रव शान्त हो जाते हैं, वासना शान्त हो जाती हैं और वह आवेश में आकर कहता है-**'भद्रं हि शर्म त्रिवरूथमस्ति ते'** तेरी शरण तीनों में श्रेष्ठ है।

अल्पज्ञता के कारण जीव बहुधा प्राप्त हुए उत्तम पदार्थ को संभाल कर नहीं रख पाता है। जीव अपनी इस दुर्बलता से डरता है। उसे चिन्ता है कि काम-क्रोधादि घातक शत्रु उस पर कहीं वार न कर दें, अपना वज्र प्रहार न कर दें और उसकी चोट खाकर वह त्रिवरूथ शरण को खो बैठे। वह उस आप्य-बन्धु से प्रार्थना करता है-**'आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि'** हिंसकों के वज्र को मुझसे बहुत दूर कर। काम-क्रोधादि के वज्र से आत्मा बचा रहे तो इसके कल्याण की उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है। तात्पर्य यह है कि शरण प्राप्त करके मनुष्य प्रमादी न बने, सदा सावधान रहे। इसके लिए वह निरभिमान होकर भगवान् से ही प्रार्थना करता है, क्योंकि उसे अपनी दुर्बलता का भान हो चुका है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

वेद क्यों पढ़ें ?

-ले० शिव नारायण उपाध्याय कोटा, राजस्थान

अथर्ववेद काण्ड 9 सूक्त के प्रथम सूक्त में ही इस विषय पर विचार किया गया है कि लोग वेद का अध्ययन क्यों करें ? वेद के पढ़ने से क्या लाभ मिल सकता है? कहा गया है कि वेद ईश्वर द्वारा मानव को उससे विकास के लिए दिया गया ज्ञान ही नहीं है वरन् यह ईश्वर का भी स्वाभाविक ज्ञान है। वेद के ज्ञान के द्वारा मनुष्य सब लोक लोकान्तरों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकता है और उसे बाहरी एवं आंतरिक शक्ति प्राप्त होती है।

मातादित्यानां दुहिता वसूनां प्राणः प्रजानाममृतस्य नाभिः।
हिरण्य वर्णा मधुककशा धृताची महान् भर्गश्चरति मर्त्येषु।।
अथर्व. 9.1.4

पदार्थ-(आदित्यानाम्) सूर्य लोकों की (माता) माता (बनाने वाली) (वसूनाम्) धनों की (दुहिता) पूर्ण करने वाली (प्रजानाम्) प्रजाओं (जीव जन्तुओं) की (प्राणः) प्राण (जीवन) और (अमृतस्य) अमरपन की (नाभिः) नाभि (मधु) हिरण्यवर्णा) तेज रूप वाली (घृताची) सेवन सामर्थ्य पहुंचाने वाली (मधुकशा) वेद वाणी (महान्) बड़े (भर्गः) प्रकाश (रूप होकर) (मर्त्येषु) मनुष्यों के बीच (चरति) विचरती है।

भावार्थ-वेद ज्ञान के अनुसार ही परमात्मा ने सूर्यादि लोकों को उत्पन्न किया है। वेद ज्ञान से ही धनों की प्राप्ति होती है। वैदिक ज्ञान ही लोगों को पुरुषार्थी बनाता है। वेद वाणी के द्वारा कार्य करने की क्षमता का विकास होता है और वेद के ज्ञान द्वारा ही मनुष्य ज्ञानवान होकर समाज को प्रकाशित करता है। कहा जाता है कि परमात्मा ज्ञान का भण्डार है और ज्ञान में ही परमात्मा का निवास है। तत्व ज्ञानी लोगों की ऐसी ही मान्यता है।

मधोः कशामजनयन्त देवास्तस्या गर्भो अभवद् विश्वरूपः।
तं जातं तरुणं विपर्ति माता स जातो विश्वा भुवना वि चष्टे।।
अथर्वः 9.1.5

पदार्थ-(देवाः) पुरुषार्थी पुरुषों ने (मधोः) ज्ञान की (कशाम्) वाणी को (अजयन्त) प्रकट किया है। (तस्या) उस वाणी का (गर्भः) गर्भ (आधार) (विश्वरूपः) सब रूपों का करने वाला (परमेश्वर) (अभवत्) हुआ है। (माता) बनाने वाली (वेदवाणी) (तम्) उस (जातम्) प्रसिद्ध (तरुणम्) तारने वाले (परमेश्वर) में (विपर्ति) भरपूर है, (सः) वह (जातः) प्रसिद्ध (परमेश्वर) (विश्वा भुवना) सब भुवनों को (विचष्टे) देखता रहता है।

भावार्थ-पुरुषार्थी पुरुषों ने श्रम करके ज्ञान की वाणी वेद वाणी को प्राप्त किया है। इस वेद वाणी का मूलाधार सब रूपों का बनाने वाला परमेश्वर है। ज्ञान की माया यह वेद वाणी अपना आधार सबको तारने वाले परमेश्वर में खोजती है। वह वेद वाणी का स्वामी परमात्मा तटस्थ रूप से सब लोक लोकान्तरों को देखता है। वेद वाणी के द्वारा ही हम उस स्वामी परमेश्वर को जान सकते हैं।

कस्तं प्र वेद क उ तं चिकेत यो अस्या हृदः कलशः सोमधानो अक्षितः।
ब्रह्मा सुमेधा सो अस्मिन् मदेत्।। **अथर्व. 9.1.6**

पदार्थ-(कः) कौन पुरुष (तम्) उस (परमेश्वर) को (प्र वेद) अच्छी प्रकार (वेद) जानता है। (कः उ) किसने ही (तम्) उसको (चिकेत) समझाता है (यः) जो (परमेश्वर) (अस्याः) इस (वेदवाणी) के (हृदयः) हृदय का (कलशः) कलश (अक्षितः) अक्षय (सोमधानः) अमृत का पात्र है। (सः) वह (सुमेधाः) उत्तम बुद्धि (ब्रह्मा) वेद वेत्ता (अस्मिन्) इस परमेश्वर के स्वरूप को ठीक तरह से समझ कर (मदेत) आनन्द पाता है।

यह वेद वाणी परमेश्वर के हृदय का कभी क्षय न होने वाला अमृत कलश है। इसे जानकर वेद वेत्ता आनन्द प्राप्त करता है। वेद वाणी के ज्ञान से पुरुष में एक तरह का आकर्षण उत्पन्न हो जाता है।

स तौ प्र वेद स उ तौ चिकेत यावस्याः स्तनो सहस्त्रधारावक्षितौ।
ऊर्जं दुहाते अनप्रस्फुरन्तौ।।
-अथर्व. 9.1.7

पदार्थ-वह विद्वान् उन दोनों को अच्छी प्रकार जानता है, उसने ही उन दोनों को समझा, जो दोनों इस वेद वाणी के स्तनरूप (धारण, आकर्षण गुण) सहस्त्रों धारण शक्ति वाले, अक्षय और निश्चल होकर बल को परिपूर्ण करते हैं।

वैदिक ज्ञान के आधार पर व्यक्ति सभी प्रकार की उन्नति करता है।

हिङ्कृरिक्रती बृहती वयोधा उच्चैर्घोषाभ्येति या व्रतम्।
त्रीन घर्मानभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः।।
अथर्व. 9.1.8

पदार्थ-(हिङ्कृरिक्रती) अत्यन्त वृद्धि करती हुई (वयोधाः) बल का अन्न देने वाली (उच्चैर्घोषा) ऊंचा शब्द रखने वाली (या) जो (बृहती) बहुत बड़ी (ब्रह्म विद्या) (व्रतम्) अपने नियम पर (अभ्येति) चली चलती है। वह (त्रीन) तीन (शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक) (घर्मान्) यज्ञों की (अभि) सब ओर से (वावशाना) अति कामना करती हुई (मायुम्) शब्द (मिमाति) करती है और (पयोभिः) बलों के साथ (पयते) चलती है।

भावार्थ-वेद वाणी के द्वारा मनुष्य को सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त होता है। ब्रह्म विद्या उच्च स्वर से व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती हुई अपने नियम से आगे से आगे चलती रहती है। वह शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक की सब ओर से कामना करती हुई ऊंचे स्वरों में ज्ञान का प्रकाश करती हुई आगे बढ़ती रहती है।

वेद वाणी के जानकार व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों को भी ज्ञान की जानकारी देकर वेदज्ञ बना देते हैं। वेद वाणी के द्वारा संसार का हित होता है। इस पर कहा गया है-

स्तनयित्नुस्ते वाक् प्रजापते वृषा शुष्मं क्षिपसि भूम्यामधि।
अग्ने वातान्मधुकशा हि जज्ञे मरुतामुग्रा नप्तिः।।
अथर्व. 9.1.10

पदार्थ-हे प्रजापालक परमेश्वर! तेरी वाणी मेघ की गर्जन के समान है। तू ऐश्वर्यवान् होकर बलों को भूमि पर अधिकारपूर्वक फैलाता है। शूर पुरुषों की प्रबल न गिरने वाली शक्ति ब्रह्म विद्या ही अग्नि से और वायु से प्रकट होती है।

भावार्थ-परमेश्वर की वाणी मेघ के समान है। उसका बल सृष्टि में फैला हुआ है। अग्नि और वायु भी उसी के बल को प्रकट कर रहे हैं।

विद्वान् मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह वेद वाणी का प्रचार करें।

मधु जनिषीय मधु वंशिषीय।
पयस्वानग्न आगमं तं मा सं सृज वर्चसा।। **अथर्व. 9.1.14**

पदार्थ-(मधु) ज्ञान को (जनिषीय) मैं उत्पन्न करूं। (मधु) ज्ञान की (वंशिषीय) याचना करूं। (अग्ने) हे विद्वान्! (पयस्वान्) गतिशील मैं (आ अगमम्) आया हूं, (तम्) उसको (मा) मुझको (वर्चसा) वेदाध्ययन आदि के प्रकाश से (सम् सृज) संयुक्त कर।

वेद ज्ञान के कारण व्यक्ति अपने जीवन को सफल बनाकर विद्वानों में सम्मान भी प्राप्त करता हूं।

सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा।
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः।। **अथर्व. 9.1.15**

पदार्थ-(अग्ने) हे तेजस्वी विद्वान्। (मा) मुझको (वर्चसा) ब्रह्म विद्या के प्रकाश से (सम्) अच्छे प्रकार (प्रजया) प्रजा से (सम्) अच्छे प्रकार और (आयुषा) जीवन से (सं सृज) अच्छे प्रकार संयुक्त कर। (देवाः) विद्वान् लोग (अस्य) इस (मे) मुझको (विद्युः) जानें (इन्द्रः) ऐश्वर्यवान् आचार्य (ऋषिभिः सह) ऋषियों के साथ मुझे (विद्यात्) जाने।

भावार्थ-ब्रह्म विद्या वेद वाणी के द्वारा ही सब प्राणी अपनी जीविका प्राप्त करते हैं।

स्तनयित्नुस्ते वाक प्रजापते वृषा शुष्मं क्षिपसि भूम्यां दिवि।
तां पशव उप जीवन्ति सर्वे तेनो सेषमूर्जं विपर्ति।।
अथर्व. 9.1.20

पदार्थ-हे प्रजा पालक परमेश्वर! तेरी वाणी मेघ के गर्जन के समान है। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

सम्पादकीय.....

स्वच्छता अभियान कैसे पूर्ण होगा ?

2 अक्तूबर 2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयंती पर हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गए स्वच्छता अभियान को इस वर्ष 2 अक्तूबर को एक वर्ष पूरा हो गया है। इस एक वर्ष के अन्तराल में स्वच्छता के अभियान को जितना महत्त्व देना चाहिए था उतना नहीं दिया गया। जितने उत्साह और उमंग के साथ इस अभियान को शुरू किया गया था उतनी ही जल्दी इस अभियान से किनारा किया गया है। जब इस अभियान को शुरू किया गया था तो बड़े-बड़े नेताओं से लेकर अभिनेताओं तक के हाथ में झाड़ू दिखाई देता था और सड़कों, गलियों और चौराहों पर सफाई करते थे। जहां तक प्रधानमन्त्री जी के इस अभियान का सवाल है तो उसका उत्तर यह है कि हमारे प्रधानमन्त्री जी के द्वारा शुरू किया यह अभियान बहुत उत्तम था। उन्होंने ऐसी परिस्थितियों में इस अभियान को आरम्भ किया था जिस समय हमारी पहचान गंदगी के ढ़ेर तले दबकर रह गई थी। किसी का ध्यान इस ओर नहीं था। जब हम पश्चिमी देशों की साफ सफाई से स्वयं की तुलना करते हैं तो बेहद ग्लानि होती है। हर सुबह पूरे देश में रेल की पटरियों के दोनों ओर के दृश्य किसी भी विदेशी के सामने सिर झुकाने के लिए काफी हैं। इन परिस्थितियों में प्रधानमन्त्री जी का यह सराहनीय कदम है। परन्तु स्वच्छता केवल हमारे लिए अभियान नहीं, दिखावा नहीं बल्कि हमारा स्वभाव होना चाहिए। इस स्वच्छता को हमने केवल एक अभियान के रूप में नहीं देखना है जो कुछ समय के पश्चात खत्म हो जाए। इस स्वच्छता को हमने अपने जीवन का स्वभाव बनाना है। यह अभियान किसी को दिखाने के लिए नहीं, फोटो खिंचाने के लिए नहीं, राजनीति से प्रेरित नहीं अपितु राष्ट्रहित को सामने रखकर होना चाहिए।

इस स्वच्छता के मिशन को पूरा करने के लिए हमें स्कूलों में बच्चों को जागरूक करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाने चाहिए। माता-पिता और अध्यापकों सभी का कर्त्तव्य बनता है कि वे बच्चों को सफाई के प्रति जागरूक करें। बच्चों को कूडेदान का इस्तेमाल करना सिखाएं। उनकी छोटी-छोटी आदतों को सुधारने का प्रयास करें। स्कूल में, अपने घर में, रास्ते में किसी प्रकार की कोई गंदगी न करना बच्चों का स्वभाव होना चाहिए। स्कूल में बच्चों की प्रत्येक गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए। बच्चों को बताना होगा कि टॉफी खाकर उसका कागज इधर-उधर फैंकने के बजाय कूड़ेदान में डालना चाहिए, मूंगफली खाकर उसके छिलके को इकट्ठा करके कूड़ेदान में डाले तथा केले का छिलका भी कूडेदान में डाले क्योंकि इससे जहां गंदगी फैलती है वहीं अगर किसी के पांव के नीचे आ जाए तो गिर भी सकते हैं। ये बच्चों के प्रतिदिन के कार्य हैं। अगर बच्चे इन कार्यों में स्वच्छता को अपना लें तो हमारा स्वच्छता का लक्ष्य पूरा हो सकता है। बच्चों को बचपन से ही इन कार्यों की आदत होनी चाहिए। आज यह आवश्यक है कि सार्वजनिक सफाई बच्चों के पाठयक्रम का व्यवहारिक हिस्सा बनें। अन्य विषयों के साथ-साथ बच्चों को सफाई के लिए जागरूक करते रहें क्योंकि आजकल पढ़े लिखे होने का मतलब दूसरों पर हुक्म चलाना और स्वयं कुछ भी नहीं करना हो रहा है। स्वच्छता का मिशन तभी पूरा हो सकता है यदि बच्चे से बूढे तक इस अभियान का हिस्सा बन जाएं। हमारा प्रत्येक कार्य स्वच्छता के लिए होना चाहिए।

स्वच्छ भारत अभियान के लिए हमें भौतिक गंदगी की सफाई के साथ-साथ आम लोगों की मानसिकता को भी बदलना होगा। प्रधानमन्त्री ने स्वच्छ भारत को बनाने का जो लक्ष्य रखा था वह कठिन अवश्य था लेकिन असम्भव नहीं। स्वच्छता अभियान एक ऐसा अभियान है जिसमें किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वर्तमान की राजनीति में विरोध करना एक स्वभाव बन गया है। हर कार्य का विरोध करना नेताओं का स्वभाव बन गया है। उस कार्य के परिणाम को जाने बिना उसका विरोध शुरू कर देते हैं। स्वच्छता का अभियान राजनीति की भावना से ऊपर उठकर होना चाहिए। स्वच्छता राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है चाहे वह किसी भी पार्टी से सम्बन्धित क्यों न हो। दुनिया के दूसरे देशों को देखकर हमें ग्लानि होती है कि काश हमारा देश भी ऐसा ही साफ सुथरा होता। इस स्वच्छता अभियान को अपनाने से भारत को इतने लाभ होंगे कि इनकी गिनती करना मुश्किल होगा। इस समय भारत के आर्थिक विकास के लिए जो बात सबसे अधिक जरूरी है वह यह है कि विदेशी निवेश को आकर्षित किया जाए। लेकिन इसके लिए स्वच्छता जरूरी है। प्रधानमन्त्री ने 2 अक्तूबर 2014 को कहा था कि यदि भारत स्वच्छ होता है तो डब्ल्यूएचओ के अनुसार प्रति व्यक्ति वर्ष में साढे छह हजार रूपये की बचत कर सकेगा क्योंकि स्वच्छता के कारण बीमारियों पर होने वाला खर्च कम हो जाएगा। सभी को वित्तीय रूप से इसका कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा। भारत का गौरवपूर्ण इतिहास है और इसकी संस्कृति काफी पुरानी है। इसे देखने समझने के लिए बड़ी तादाद में विदेशी पर्यटक भारत आना चाहते हैं, लेकिन गंदगी की वजह से यहां आने से कतराते हैं। सिंगापुर थाईलैंड जैसे देशों की अर्थव्यवस्था उनके पर्यटन की वजह से चल रही है, लेकिन हमारे यहां पर्यटक दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं।

हमारा मानना है कि स्वच्छता सिर्फ एक अभियान नहीं, बल्कि हमारे जीवन का स्वभाव होना चाहिए। जब तक हम इसको अपना स्वभाव नहीं बनाएंगे तब तक हम स्वच्छ भारत की कल्पना नहीं कर सकते। यह उचित नहीं कि हम सफाई के विषय पर घंटों भाषण देते रहें और मुंह में गुटका, पान तम्बाकू चबाते रहे और पीक थूकते रहें और सरकार को कोसते रहें। अपने घर में सफाई रखें लेकिन घर का कूडा नाली में, पड़ोसियों के दरवाजे अथवा गली में फैंककर हम सभ्य नहीं हो सकते। पुण्य से अधिक यश की कामना के लिए भंड़ारे करने वालों को भी सफाई का ध्यान रखना चाहिए। सफाई के प्रदर्शन से हजार गुणा श्रेष्ठ है गंदगी न करने का स्वभाव बनाना। सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के द्वारा लोगों में यह भावना जरूर पैदा की जानी चाहिए और जागरूकता लाई जानी चाहिए कि सफाई बेहद महत्वपूर्ण काम है। अभी तक लोगों की अवधारणा यही है कि सफाई न करना सम्मान का प्रतीक है। लेकिन विचार का यह पहिया अब उल्टा घूमना चाहिए। कोई कितना ही बड़ा व्यक्ति क्यों न हो अगर वह किसी तरह की गंदगी करता है तो वह सभ्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। हमें सबसे पहले अपने स्वयं से, अपने परिवार से, अपने मोहल्ले से, अपने गांव से और अपने कार्यस्थल से इसे आरम्भ करना होगा। ऐसे अभियान मात्र शुरूआत हैं, अन्तिम लक्ष्य नहीं। यदि हम इस अभियान को अपना, अपने बच्चों तथा पूरे परिवार का स्वभाव , आदत बना लें तभी स्वच्छ भारत के लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है। यह अभियान एक दिन के लिए नहीं, एक महीने के लिए नहीं, एक वर्ष के लिए नहीं बल्कि यह तो निरन्तर चलने वाला अभियान है। हम सभी इसी राष्ट्र के निवासी हैं। हम भी अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए इस स्वच्छता अभियान को स्वयं अपनाएं, दूसरों को अपनाने की प्रेरणा दें।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर-22-ए चण्डीगढ़ का वार्षिक चुनाव 28-06-2015 को सम्पन्न हुआ जिसमें श्री सोमदत्त शास्त्री जी को बहुमत के साथ प्रधान चुना गया और समस्त कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सभा के पदाधिकारी एवं सदस्यों के चयन का अधिकार सर्वसम्मति से दिया गया। उसी आधार पर दिनांक 4-7-2015 को उन्होंने अन्तरंग सभा का गठन किया जो इस प्रकार है-संरक्षक-श्री बलबीर सिंह चौहान, श्री विश्वामित्र महाजन, उपप्रधान-श्री अवनीश चौहान व श्री ब्रह्मदेव बहल, मन्त्री-श्री विनोद प्रकाश गोयल, उपमन्त्री- श्री प्रेमचन्द गुप्ता व श्री धन सिंह, कोषाध्यक्ष-श्री बनी सिंह, वेद प्रचार अधिष्ठाता-श्री विनय सेठी, संयोजक आर्य वीर दल- श्री महेश कुमार आर्य, पुस्कालयाध्यक्ष-श्री सतपाल सिंह, लेखा निरीक्षक- श्री महेश कुमार आर्य, अन्तरंग सदस्य-श्री विजय उप्पल,श्री नरेश कुमार, श्री यशवीर शर्मा, श्री प्रेम लाल मट्टू, श्री रामनिहाल यादव।

-मन्त्री आर्य समाज सैक्टर-22 मोहाली

हनुमान बन्दर नहीं थे

-ले० इन्द्रजित देव, चूना भट्टियां सिटी सैंटर के निकट, यमुनानगर

भारतीय इतिहास में अनेक विद्वान तथा बलवान् हुए हैं। हनुमान उनमें से एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे। उनकी सेवक के रूप में बहुत अच्छी ख्याति है। उनका जीवन आदर्श ब्रह्मचारी का भी रहा परन्तु हमारे नादान पौराणिक भाईयों ने उन्हें बन्दर मानकर उनके साथ अन्याय किया है-

एक वे हैं जो दूसरों की छवि को देते हैं सुधार।

एक हम हैं लिया अपनी ही सूरत को बिगाड़।

वे बन्दर न थे, अपितु पूर्णत: उपरोक्त गुणों से युक्त एक प्रेरक, आदर्श तथा कुलीन महापुरुष थे। कुछ प्रमाणों से हम इसे स्पष्ट करने का नन्हा प्रयास कर रहे हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम से उनकी प्रथम भेंट तब हुई थी, जब राम व लक्ष्मण भगवती सीता की खोज में इधर-उधर भटक रहे थे। खोजते-खोजते वे दोनों ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव की ओर गए तो सुग्रीव उन्हें दूर से देखकर भयभीत हो गया। उसने अपने मन्त्रियों से यह कहा कि तुम जाकर पता लगाओ कि ये कोई दुर्भावना लेकर तो नहीं आए हैं।'' सुग्रीव की इस बात को सुनकर अत्यन्त बलशाली हनुमान जहां श्रीराम तथा श्री लक्ष्मण थे, उस स्थान के लिए तत्काल चल दिए। वहां पहुंचने से पूर्व उन्होंने अपना रूप त्याग कर भिक्षु (सामान्य तपस्वी) का रूप धारण किया तथा श्री राम व लक्ष्मण के पास जाकर अपना परिचय दिया तथा उनका परिचय लिया। तत्पश्चात् श्री राम ने अनुज लक्ष्मण से कहा-

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेद-धारिण:।

नासामवेदविदुष: शक्यमेवं विभाषितुम।।

-वा. रा. किष्किंधा कांड, तृतीय सर्ग, श्लोक १८

अर्थ-जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इस प्रकार सुन्दर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता।

नूनं व्याकरणं कृत्सनमनेन बहुधा श्रुतम्।

बहु व्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम्।।

-वा. र.. किष्किन्धाकाण्ड, तृतीय सर्ग, श्लोक २९

अर्थ-निश्चय ही इन्होंने सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अध्ययन किया है। यही कारण है कि इनके इतने समय बोलने में इन्होंने कोई भी त्रुटि नहीं की है।

न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा।

अन्येष्वपि च सर्वेषु दोष: संविदित: क्वचित्।।

-वा. रामायण, किष्किन्धाका काण्ड तृतीय सर्ग, श्लोक 30

अर्थ-''सम्भाषण के समय इनके मुख, नेत्र, ललाट, भौंह तथा अन्य सब अंगों से भी कोई दोष प्रकट हुआ हो, ऐसा कहीं ज्ञात नहीं हुआ।''

इससे स्पष्ट है कि हनुमान वेदों के विद्वान तो थे ही, व्याकरण के उत्कृष्ट ज्ञाता भी थे तथा उनके शरीर के सभी अंग अपने-अपने करणीय कार्य उचित रूप में ही करते थे। शरीर के अंग जड़ पदार्थ हैं और मनुष्य का आत्मा ही अपने उच्च संस्कारों से उच्च कार्यों के लिए शरीर के अंगों का प्रयोग करता है। क्या किसी बन्दर में यह योग्यता हो सकती है कि वह वेदों का विद्वान बने ? व्याकरण का विशेष ज्ञाता हो ? अपने शरीर की उचित देखभाल भी करे ?

रामायण का अब हम दूसरा प्रमाण इस विषय में प्रस्तुत करते हैं। यह प्रमाण तब तक का है, जब अंगद, जाम्बवान् व हनुमान आदि समुद्र तट पर बैठकर समुद्र पार जाकर सीता जी की खोज करने के लिए विचार कर रहे थे तब जाम्बवान ने हनुमान जी को उनकी उत्पत्ति कथा सुनाकर समुद्रलङ्घन के लिए उत्साहित किया। केवल एक ही श्लोक वहां से उदधृत है-

स त्वं केसरिहण: पुत्र: क्षेत्र ज्ञो भीमविक्रम:।

मारुतस्यौरस: प्त्रस्तेजसा चापि तत्सम:।।

-वा. रामायण, किष्किन्धाका काण्ड सप्तषष्टिम सर्ग, श्लोक २८

अर्थ-हे वीरवर! तुम केसरी के क्षेत्रज्ञ पुत्र हो। तुम्हारा पराक्रम शत्रुओं के लिए भयंकर है। तुम वायुदेव के औरस पुत्र हो, इसलिए तेज की दृष्टि से उन्हीं के समान हो।'' इससे सिद्ध है कि हनुमान जी के पिता केसरी थे परन्तु उनकी माता अंजनी ने पवन नामक पुरुष से नियोग द्वारा प्राप्त किया था। इस सत्य को स्वयं हनुमान् जी ने भी स्वीकार किया, जब वे लंका में रावण के दरबार में प्रस्तुत किए गए थे-

अहं तु हनुमान्नाम मारुतस्यौरस: सुत:।

सीतायास्तु कृते तूर्ण शतयोजनमातम्।।

-वा रामायण, सुन्दर काण्ड, त्रयस्त्रिश:

अर्थ-''मैं पवनदेव का औरस पुत्र हूं। मेरा नाम हनुमान है। मैं सौ योजन पारकर सीता जी की खोज में आया हूं।''

हनुमान को मनुष्य न मानकर उन्हें बन्दर मानने वालों से हमारा निवेदन है कि इन दो प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध है कि हनुमान जी बन्दर न थे, अपितु वे एक नियोगज पुत्र थे। नियोगज प्रथा मनुष्य समाज में अतीत में प्रचलित थी। यह प्रथा बन्दरों में प्रचलित होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। रामायण के इस प्रबल प्रमाण के होते हुए हनुमान जी को मनुष्य मानना ही पड़ेगा।

रामायण में से ही हम तीसरा प्रमाण भी प्रस्तुत करते हुए सिद्ध करते हैं कि हनुमान मनुष्य ही थे, न कि वे बन्दर थे। यह प्रमाण है तब का, जब हनुमान लंका में पहुंच तो गए थे किन्तु बहुत प्रयास करने पर भी सीता जी का पता अभी नहीं पाया तो वे सोचने लगे थे कि बिना सीता जी का अता-पता पाए मैं यदि लौटूंगा तो राम जो तथा स्वामी सुग्रीव जी को क्या सूचना दूंगा ? वहां हाहाकार मचेगा। वाल्मीकि ऋषि के शब्दों में-

सोऽहं नेव गमिष्यामि किष्किन्धां नगरीमित:।

वानप्रस्थो भविष्यामि ह्यदृष्टवा जनकात्मजाम्।।

-वा. रा. सुन्दर कांड, सप्तम, सर्ग

अर्थ-''मैं यहां से लौटकर किष्किन्धा नहीं जाऊंगा। यदि मुझे सीता जी के दर्शन नहीं हुए तो मैं वानप्रस्थ धारण कर लूंगा।''

हनुमान जी को मनुष्य न मानकर बन्दर घोषित करने वाले अपने पौराणिक भाई-बहनों से निवेदन हैं कि वे अपना हठ त्यागकर यह तथ्य तुरन्त स्वीकार कर लें कि हनुमान सच्चे वैदिक धर्मी मनुष्य थे, न कि वे बन्दर थे। क्योंकि वानप्रस्थी बनने की बात सोचना तो दूर की बात है, वानप्रस्थ क्या होता है, बन्दरों को यह भी ज्ञात नहीं होता। हनुमान को बन्दर मानने वाले लोग, तुलसीदास गोस्वामी द्वारा रचित ''हनुमान चालीसा'' का पाठ करते हैं परन्तु उसमें भी एक प्रमाण ऐसा है जो हमारी बात का समर्थन करता है-

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजे।

कान्धे मूँज जनेऊ साजे।।

काश! ऐसे लोग इस चालीसा में उल्लिखित यह पांचवां पद बोलते-पढ़ते समय इतना समझ पाते कि इसके अनुसार हनुमान जी अपने कन्धे पर जनेऊ धारण किए फिरते थे तथा बन्दर नहीं, अपितु जनेऊ (-यज्ञोपवीत) तो मनुष्य ही धारण करते हैं।

हनुमान दूरस्थ किसी पर्वत पर जाकर मूर्छित लक्ष्मण के उपचार के लिए संजीवनी बूटी लाए थे। यह कार्य भी कोई बन्दर नहीं कर सकता अपितु कोई मनुष्य ही कर सकता था जिसे जड़ी बूटियों का पर्याप्त ज्ञान हो।

हनुमान से हटकर अब थोड़े विचार उनके समकालीन रामायण के कुछ अन्य पात्रों के विषय में भी प्रस्तुत हैं। इन में एक प्रसंग बाली की पत्नी तारा से सम्बद्ध है। जब सुग्रीव दूसरी बार बाली को युद्ध के लिए ललकारने गया तो बाली की पत्नी तारा ने अपने पति को राम जी के मैत्री कर लेने की प्रार्थना की परन्तु बाली ने ऐसा न करके सुग्रीव का सामने करने, सुग्रीव का घमण्ड चूर-चूर करने, परन्तु सुग्रीव के प्राण हरण न करने का वचन देकर तारा को वापिस राज प्रसाद में चले जाने को कहा तो-

तत: स्वस्त्ययनं कृत्वा मन्त्रविद् विजयैषिणी।

अन्त:पुरं सह स्त्रीभि: प्रविष्टा शोकमोहिता।।

-वा. रा. किष्किन्धा कांड, षोडश: सर्ग:, श्लोक-12

(शेष पृष्ठ 6 पर)

महर्षि दयानन्द तीनों ऐषणाओं से परे थे

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड कोलकत्ता

ऐषणाएं यानि इच्छाएं जिनसे मनुष्य बन्धा हुआ रहता है। ये तीन प्रकार की होती हैं-1. वित्तैषणा 2. पुत्रैषणा 3. लोकैषणा। इन तीनों ऐषणाओं ने महर्षि दयानन्द को छुआ तक नहीं था। जबकि इन तीनों ऐषणाओं से सभी मनुष्य लिप्त रहते हैं। इन्हीं की प्राप्ति में मनुष्य अपना पूरा जीवन समाप्त कर लेता है, फिर भी ऐषणाएं पूर्ण नहीं होती। मनुष्य अपनी ऐषणाओं को प्राप्त करने के लिए जितना अधिक प्रयत्न करता है और इनको कुछ सीमा तक प्राप्त भी करता है। परन्तु इनकी प्राप्ति से मनुष्य की भूख कभी नहीं मिटती बल्कि भूख और अधिक बढ़ती जाती है। इसलिए ऐषणाओं की प्राप्ति करना मनुष्य के लिए सुख का साधन नहीं बल्कि दु:ख का कारण है। इसलिए यजुर्वेद ने अपने चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र में कहा है-

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध: कस्यस्विद्धनम् अर्थात् हम संसार का त्याग भाव से भोग करें यानि इसमें लिप्त न हो। लालच न करो। यह धन किसी का नहीं है यानि ईश्वर का है। महर्षि दयानन्द का जीवन इस वेद मन्त्र के अनुसार था। उनको किसी प्रकार का आकर्षण बान्ध नहीं सकता था। महर्षि का अपने मन के ऊपर पूरा अधिकार था। मन उनके अधीन था इसलिए स्वामी जी मन को जिधर ले जाना चाहते थे मन उसी तरफ चलता था। मन उनके अधीन था इसलिए स्वामी जी मन को जिधर ले जाना चाहते थे मन उसी तरफ चलता था। मन पर पूरा नियन्त्रण रखने वाला व्यक्ति ही अपने जीवन में सफल हो सकता है। महर्षि के अपने जीवन में सफल होने का सबसे बड़ा कारण यही था कि उनका अपने मन के ऊपर पूरा नियन्त्रण था इसलिए उनका इन तीनों ऐषणाओं पर पूरा अधिकार था। वे इनमें लिप्त नहीं थे। इसका संक्षिप्त विवरण इसी भांति है।

1. वितैषणा-महर्षि जी के पिता कर्षण जी तिबाड़ी एक अच्छे जमींदार थे, रुपयों का लेन-देन भी करते थे और मोरवी राज्य की तरफ से इनको काफी अधिकार मिले हुए थे। वे एक अच्छे सत्ताधारी थे और प्रबन्ध को बनाए रखने के लिए वे कुछ सैनिकों को भी अपने पास रखते थे। इस प्रकार स्वामी जी एक अच्छे धनाढय परिवार में पैदा हुए थे और अपने माता-पिता जी पहली सन्तान होने से काफी लाड-प्यार में उनका जीवन बीता था। पैसे की उनके पास कोई कमी नहीं थी फिर भी वे सच्चे शिव की खोज तथा मृत्यु के रहस्य को जानने के लिए नौजवानी काल में ही केवल 22 वर्ष की आयु में ही अपने घर को छोड़ दिया और देश को अज्ञान, अन्ध विश्वास व पाखण्डों से मुक्ति दिलाने के लिए अनेकों दु:खों व कष्टों को सहते हुए देश के चारों कोनों में भ्रमण किया और अपने जीवन में भी कितने ही अवसरों पर उन्हें लोभ व लालच दिया गया। पर उस लंगोट धारी सन्यासी ने अपने सिद्धान्तों पर अटल रहने के लिए उन लालच व प्रलोभनों को ठुकरा दिया और असत्य से कभी समझौता नहीं दिया। वैसे तो उनके जीवन में ऐसी अनेकों घटनाएं आती हैं। पर यहां पर केवल दो घटनाओं को लिख देना पर्याप्त समझता हूं।

2. महर्षि जी अपने जीवन में अन्तिम दिनों में यह सोचकर कि साधारण व्यक्तियों को समझाने की बजाय मुझे राजा-महाराजाओं से मिलकर उन्हें वैदिक धर्म की बातें समझानी चाहिएं ताकि वेद प्रचार का कार्य तथा परोपकारी कार्य अधिक मात्रा में किए जा सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्वामी जी उदयपुर के महाराजा सज्जन सिंह के पास पहुंचे। महाराजा स्वामी जी से बहुत अधिक प्रभावित हुए और उनको अपना गुरू मानकर वेद पढ़ने लगे। एक दिन महाराजा ने कहा कि स्वामी जी आप केवल मूर्ति पूजा का विरोध न करें बाकी सब काम आप अपनी इच्छा अनुसार करते रहें तो मैं आपको एक लिंग महादेव के मंदिर का महन्त बना दूं। जिसमें वार्षिक लाखों रुपयों की आमदनी है, आप अपनी ज़िन्दगी आराम से काट सकोगे। स्वामी जी ने महन्त बनने से इन्कार कर दिया, तब महाराजा सज्जन सिंह ने कहा कि स्वामी जी आपको मालूम है कि आप किससे बातें कर रहे हो, तब स्वामी जी ने कहा कि मुझे मालूम है कि मैं किससे बातें कर रहा हूं, राजन! आपकी आज्ञा का मैं उल्लंघन करूं तो मैं अभी दौड़ लगाकर आपके राज्य की सीमा से निकलना चाहूं तो रात भर में निकल सकता हूं परन्तु उस परम् पिता परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन करूं तो उसके राज्य से बाहर कभी नहीं निकल सकता, इसलिए आप ही बताएं कि मैं आपकी आज्ञा मानूं या ईश्वर की आज्ञा तब महाराजा ने कहा कि स्वामी जी आपको इतना बड़ा पद कोई नहीं दे सकता, आप विचार करें कि आपको क्या करना चाहिए, तब स्वामी जी ने कहा कि राजन्! यह सही है कि मुझे इतना बड़ा पद देने वाला कोई नहीं मिलेगा, तो आपको भी इतने बड़े पद को ठुकराने वाला भी कोई नहीं मिलेगा। इन उत्तरों से महाराजा बहुत खुश हुए और स्वामी जी से क्षमा प्रार्थना करने लगे। यह था स्वामी जा का वित्तैषणा के प्रति विरोधी भाव। दूसरी घटना यह है कि स्वामी जी जब उत्तराखण्ड का भ्रमण कर रहे थे तब वे जोशी मठ पहुंचे। जोशी मठ का महन्त स्वामी जी के आकर्षक शरीर, बल, बुद्धि, विद्या से बहुत प्रभावित हुए और स्वामी जी से कहा कि आप इस मठ के महन्त बन जाओ, मैं सन्यासी बनना चाहता हूं, तब स्वामी जी ने कहा कि महन्त जी मैंने पिता जी की करोड़ों की सम्पत्ति को ही ठोकर मार दी, तो आपकी सम्पत्ति का महत्त्व ही क्या है ? मैं तो किसी बड़े उद्देश्य के लिए ही घूम रहा हूं, मुझे आपके मठ का महन्त नहीं बनना, यह कहकर आगे निकल गए। यह भी स्वामी जी की वित्तैषणा से प्रति उदासीनता।

3. पुत्रैषणा-पुत्रैषणा होने का तो प्रश्न ही नहीं है। यदि पुत्रैषणा होती तो विवाह ही करवा लेते। जब स्वामी जी के माता-पिता को यह ज्ञान हो गया कि मूल शंकर (जो स्वामी जी का बचपन का नाम था) में कुछ वैराग्य के भाव आए हुए हैं, इसलिए इसका विवाह कर देना चाहिए और विवाह की तैयारी भी करने लगे। जब मूलशंकर को यह जानकारी दी गई कि तुम्हारे विवाह की तैयारी हो रही है, तब उसने माता-पिता का साफ कर दिया कि मैं विवाह नहीं कराऊंगा। छोटी बहन और चाचा जी की मृत्यु के बाद, मूलशंकर का वैराग्य और भी बढ़ गया था। बाईस वर्ष की भरी जवानी में उसने गृह त्याग कर दिया। जीवन भर पूर्ण ब्रह्मचारी रह कर अपना उद्देश्य शिव की खोज में पूरे जीवन की आहुति दे दी। इससे साफ सिद्ध होता है कि स्वामी जी का विवाह करवाने की बिल्कुल ही इच्छा नहीं थी। तब पुत्रैषणा होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। स्वामी जी के जीवन में एक घटना आती है कि एक बहुत सुन्दर औरत ने स्वामी जी से कहा कि स्वामी जी मैं आप जैसा सुन्दर पुत्र चाहती हूं, तब स्वामी जी ने कहा, माता जी! मैं तो आपका ही पुत्र हूं, आप मुझे ही अपना पुत्र समझे। इससे बड़ा उदाहरण पुत्रैषणा न होने का और क्या हो सकता है ?

4. लोकैषणा-महर्षि का जीवन पढ़ने से ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने कितने ही बहादुरी के काम किए। जैसे चार घोड़ों की बग्गी को पीछे से पकड़ कर रोक लेना, लड़ते हुए दो खूंखार साण्डों के सींग पकड़ कर अलग-अलग कर देना। कर्ण सिंह जैसे बलशाली की तलवार पकड़ कर दो टुकड़े कर देना। अपने प्राण बचाने के लिए कितनों को पछाड़ कर फिर ऊंची दीवार को फरलांग कर अपने प्राणों की रक्षा करना आदि अनेक घटनाएं हैं, परन्तु स्वामी जी ने कभी भी अभिमान भरी बात नहीं कही और अपराधी को सदैव सजा न देकर क्षमा दान ही दिया। इससे उनकी निरभिमानता, विनम्रता, दयालुता आदि गुण स्पष्ट प्रकट होते हैं। जो व्यक्ति निरभिमानी विनम्र, दयालु व परोपकारी होता है, वह कभी भी यश का भूखा नहीं होता। इसलिए महर्षि दयानन्द में लोकैषणा नाम-मात्र भी नहीं थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि जी ने इन तीनों ऐषणाओं पर विजय प्राप्त कर रखी थी।

आर्य समाज मोहाली का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर फेज-6 मोहाली का चुनाव रविवार दिनांक 27 सितम्बर 2015 को आर्य समाज मोहाली के सत्संग हाल में सायं पांच बजे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। इस चुनाव में आर्य समाज के साधारण सभा के सभी सदस्य उपस्थित थे। इस चुनाव में श्री चरणजीत आर्य प्रधान, डा. श्रुति कांत आर्य महामंत्री, एवं श्री राज कुमार शिक्षा बोर्ड वाले कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से चुने गये। एक अन्य प्रस्ताव में दिये गये अधिकार के आधार पर आर्य समाज मोहाली के प्रधान श्री चरणजीत आर्य ने निम्न पदाधिकारियों गठित किये। उप प्रधान श्री महिन्द्रपाल मोरिया, सलाहकार श्री अनिल मिन्हास, उप मंत्री श्रीमती निर्मला कुमारी, संगठन मंत्री राज कुमार भगत, अन्तरंग सदस्य श्रीमती अनुराधा मिन्हास, श्रीमती ज्योति मिन्हास, श्रीमती अनीता रानी, श्रीमती संतोष रानी, श्री मदन मोहन राय, श्री बलवीर सिंह कौशल, श्री राजीव जैन, श्रीमती संतोष मारिया।

-डा. श्रुतिकांत महामंत्री आर्य समाज

पृष्ठ 4 का शेष-हनुमान बन्दर नहीं.....

अर्थ-वह पति की विजय चाहती थी तथा उसे मन्त्र का भी ज्ञान था। इसलिए आने वाली की मंगलकामना से स्वस्तिवाचन किया तथा शोक से मोहित होकर वह अन्य स्त्रियों के साथ अन्त:पुर को चली गई।

मन्त्र का ज्ञान बन्दरों को अथवा बन्दरियो को नहीं होता, न ही हो सकता है। अत: सिद्ध होता है कि हनुमान का जिनसे मिलना-जुलना आदि था, उनकी पत्नियां भी मनुष्य ही थीं। यही तारा जब अपने पति बाली को प्राण त्यागते देख रही थी तो अन्य बातों के अतिरिक्त यह भी बोली-

यद्यप्रियं किंचिदसम्प्रधार्य कृतं मया स्यात् तव दीर्घबाहो।

क्षमस्व मे तद्धरिवंशनाथ व्रजामि मूर्धा तव वीरपादौ।।

-वा. रा., किष्किन्धा काण्ड, एकविंश: सर्ग:, श्लोक २५

अर्थ-"महाबाहो! यदि नासमझी के कारण मैंने आपका कोई अपराध किया तो आप उसे क्षमा कर दें। वानर वंश के स्वामी वीर आर्यपुत्र! मैं आपके चरणों में मस्तक रखकर यह प्रार्थना करती हूं।" इस श्लोक से सिद्ध है कि बाली आर्यों के एक वंश वानर में जन्मा मनुष्य ही था। इसी प्रकार तारा को भी महर्षि वाल्मीकि ने आर्यपुत्री ही घोषित किया-

तस्येन्द्रकल्पस्य दुरासदस्य महानुभावस्य समीपमार्या।

आर्ताततिूर्णां व्यसनं प्रपन्ना जगाम तारा परिविह्वलन्ती।।

-वा. रा., किष्किन्धा काण्ड, चतुर्विंश: सर्ग:, श्लोक २९

अर्थ-"उस समय घोर संकट में पड़ी हुई शोकपीड़ित आर्या तारा अत्यन्त विह्वल हो गिरती-पड़ती तीव्र गति से महेन्द्र तुल्य दुर्जय वीर महानुभाव श्री राम के समीप गई।"

बाली की मृत्यु के पश्चात् अङ्गदेव सुग्रीव ने बाली के शव का अन्त्येष्टि संस्कार शास्त्रीय विधि से किया-

ततोऽग्निं विधिवद् दत्त्वा सोऽपसव्यं चकारत।

पितरं दीर्घमहवानं प्रस्थितं व्याकुलेन्द्रिय:।।

संस्कृत्य वालिनं तं तु विधिवत् पलवगर्षभा:।

आजग्मुरुदरूं कर्तुं नदीं शुभजलां शिवाम्।।

-वा. रा., किष्किन्धा काण्ड, एकविंश: सर्ग:, श्लोक ५०-५१

अर्थ-फिर शास्त्रीय विधि के अनुसार उसमें आग लगाकर उन्होंने उसकी प्रदक्षिणा की। इसके बाद यह सोचकर कि मेरे पिता लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थित हुए हैं, अङ्गद की सारी इन्द्रियां शोक से व्याकुल हो उठीं। इस प्रकार विधिवत बाली का दाह संस्कार करके सभी वानर जलाञ्जलि देने के लिए पवित्र जल से भरी हुई कल्याणकारी तुङ्गभद्रा नदी के तट पर आए।"

इस प्रमाण से सिद्ध होता है कि बाली, सुग्रीव, अङ्गद आदि वेद विहित शास्त्रीय कार्य करते थे। यह भी उनके मनुष्य होने का प्रमाण है।

उपर्युक्त तथ्यों के बाद हम अब सामान्य विश्लेषण करते हुए पौराणिकों से पूछते हैं कि बाली की पत्नी तारा, सुग्रीव की पत्नी रमा, हनुमान की मां अंजनी मनुष्य योनि की स्त्रियों से बन्दरों का जन्म होना अव्यवहारिक व अवैज्ञानिक है। अत: यह सर्वथा अमान्य है कि उक्त पुरुष बन्दर थे। यह भी निवेदन है कि बन्दरों, उनकी पत्नियों, उनके पिताओं तथा उनकी माताओं के नाम नहीं होते, उनके जीवन का कोई इतिहास नहीं होता, खाने-पीने व सोने-जागने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य वे करते नहीं। फिर उपरोक्त पात्रों के नामकरण क्यों हुए ? उनके कार्य व्यवहार मनुष्यों जैसे कैसे सम्भव हुए ?

वास्तविकता यह है कि बानर एक जाति है। इसे आंग्ल भाषा में भी कहते हैं। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा व हमीरपुर ज़िलों में नाग जाति के कुछ मनुष्य आप को मिल सकते हैं। नाग शब्द का अर्थ सर्प है परन्तु वे इस शब्द को अपने नाम के साथ सहर्ष लिखते हैं। पिछले वर्ष केन्द्र सरकार में कार्यरत एक उच्चाधिकारी जब सेवानिवृत्त हुए थे तो किसी विशेष कारणवश उसका नाम भी दैनिक पत्रों में छपा था। तब पता चला कि वह भी उपरोक्त नाग जाति का ही सदस्य था। सन् 1961 में भारत के राष्ट्रपति पद पर वी. वी. गिरि नामक एक दक्षिण भारतीय व्यक्ति आसीन हुआ था। गिरि शब्द का अर्थ पर्वत है परन्तु वह पर्वत न होकर मनुष्य ही था। गिरि उसका Sur Name था या उसकी जाति थी। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा कुछ अन्य प्रदेशों में बहुत से लोग (अधिकतर जन्मना क्षत्रिय) अपने नाम के साथ सिंह शब्द का प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ शेर है। हरियाणा में बहुत से लोग मोर जाति से सम्बद्ध हैं और उनके नाम के पीछे मोर शब्द लिखा होता है। पंजाब के एक राज्यपाल जयसुख लाल हाथी हुए हैं। हरियाणा में सिंह मार नामक जाति के कई व्यक्ति आपको मिल सकते हैं।

इस वर्णन के आधार पर हमारा निवेदन है कि जिस प्रकार नाग, गिरि, मोर, सिंह, हाथी व सिंहमार नामक जातियां मनुष्यों की ही हैं, न कि सर्पों, पर्वतों, शेरों, हाथियों व शेरों के हत्यारों आदि की हैं, हालांकि इनके शाब्दिक अर्थ उपरोक्त ही हैं। इसी प्रकार रामायण के हनुमान, सुग्रीव, बाली, तारा, रूमा, जाम्बवान् व अङ्गद आदि वानर नामक मनुष्य जाति के सदस्य थे, न कि ये बन्दर थे। यह उनके कार्यों व इतिहास से प्रमाणित किया गया है।

पृष्ठ 2 का शेष-वेद क्यों पढ़े.....

तू ऐश्वर्यवान् होकर बल को भूमि पर और आकाश में फैलाता है। सब देखने वाले जीव उस वाणी का सहारा लेकर जीवित रहते हैं। उसी ही कारण से वह अन्न और पराक्रम से मनुष्यों को संयुक्त करती है।

इसी मण्डल के सूक्त 4 में भी इसी विषय पर वेदवाणी की प्रशंसा की गई है-

गाव: सन्तु प्रजा: सन्त्वथो अस्तु तनूबलम्।

तत् सर्वमनु मन्यतां देवा ऋषभदायिने।। -अथर्व. 9.4.20

पदार्थ-(गाव:) विद्याएं (सन्तु) होवें, (प्रजा:) प्रजा (सन्तु) होवें, (अथो) और भी (तनूबलम्) शरीर बल (अस्तु) होवे। (देवा:) विद्वान् लोग (ऋषभदायिने) सर्व दर्शक परमेश्वर के ज्ञान देने वाले के लिए (तत्) वह (सर्वम्) सब (अनु मन्यन्ताम्) स्वीकार करें।

भावार्थ-वेद वेत्ता को सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

अगले मंत्र में भी इसी प्रकार का चिन्तन हुआ है-

अयं पिपान इन्द्र इद् रयिं दधातु चेतनीम्।

अयं धेनु सुदुधो नित्यवत्सां वशं दुहां विपश्चितं परो दिव:।।

-अथर्व. 9.4.21

पदार्थ-(अयम्) यह (पिपान:) प्रबृद्ध बली (इन्द्र:) बड़े ऐश्वर्य वाला जगदीश्वर (इत्) ही (चेतनीम्) चेताने वाली (रथिम्) लक्ष्मी (दधातु) देवे। (अयम्) यही परमेश्वर (सुदुधाम्) अच्छे प्रकार पूर्ण करने वाली (नित्य) नित्य (वत्साम्) निवास देने वाली (धेनुम्) वाणी और (वशम्) प्रभुत्व को (दिव:) हिंसा व मद से (पर:) परे रहने वाले (विपश्चितम्) बुद्धिमान् पुरुष के लिए (दुहाम्) परिपूर्ण करे।

भावार्थ-अहिंसक और निरभिमानी विद्वान पुरुष परमेश्वर की वेद वाणी के द्वारा उन्नति करके आनन्द भोगते हैं।

वेदाध्ययन का मुख लक्ष्य परमात्मा को जान लेना है।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदु:।

यस्तन्न वेद किमृता करिष्यति य इत् तद् विदुस्ते अमी समासते।।

अथर्व. 9.10.18

पदार्थ-(यस्मिन्) जिस (अक्षरे) व्यापक व अविनाशी (परमे) सर्वोत्तम (व्योमन्) आकाशवत् व्यापक ब्रह्म में (ऋच:) वेद विद्याएं और (विश्वे) सब (देवा:) दिव्य पदार्थ (पृथ्वी, सूर्य आदि) (अधि) ठीक-ठीक (निषेदु:) ठहरे थे। (य:) जो मनुष्य (तत्) इस ब्रह्म को (न वेद) नहीं जानता, वह (ऋचा:) वेद विद्या से (किम्) क्या (लाभ) (करिष्यति) करेगा, (ये) जो पुरुष (इत्) ही (तत्) उस (ब्रह्म) को (विदु:) जानते हैं (ते अमी) वे वहीं (पुरुष) (सम्) शोभा के साथ (आसते) रहते हैं।

वेदाध्ययन के द्वारा जो विद्वान परमेश्वर को जान लेते हैं, वे इस संसार में विशेष सम्मान प्राप्त करते हैं।

त्यागमूर्ति लाला गंगाराम जी का जन्मोत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में त्यागमूर्ति लाला गंगा राम जी का जन्मोत्सव शिक्षक दिवस के रूप में दिनांक 5 अक्तूबर 2015 से 11 अक्तूबर 2015 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर श्री सुरेश कुमार शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रवचन तथा पं सतीश सुमन और श्री सुभाष राही जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मधुर भजन होंगे। मुख्य कार्यक्रम दिनांक 11 अक्तूबर रविवार को होगा। 9:00 से 10:00 बजे तक गायत्री यज्ञ होगा। 10:00 से एक बजे तक श्रद्धांजलि समारोह होगा। इस अवसर पर बहुत से गणमान्य व्यक्तित्व पधार कर लाला गंगाराम जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे। आप सभी सपरिवार व इष्ट मित्रों सहित समारोह में सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाएं।

-सुदेश आर्य महामन्त्री आर्य समाज

श्रीमती उषा रानी भाटिया जी की अंतिम शोक सभा

दिनांक 19 सितम्बर आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर की आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी की धर्म पत्नी श्रीमती उषा रानी भाटिया जी जिनका निधन 16.9.2015 के दिन अकस्मात् हो गया था, उनकी अंतिम शोक सभा की गई जिसमें अमृतसर की सभी आर्य समाजों से लोग संवेदना व्यक्त करने के लिए सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त भाटिया परिवार के इष्ट मित्र एवम् सगे सम्बन्धी भी उपस्थित हुए। श्रीमती भाटिया जी का जीवन बड़ा धार्मिक एवम् सादा था। वे आर्य समाज के विचारों से ओत-प्रोत थी। श्री ओम प्रकाश भाटिया जी के लम्बे चौड़े आर्य समाज के सभी कृत्यों में लगे रहने में उनका पूरा सहयोग रहा। इस दृष्टि से वह पूरी तरह पतिव्रता महिला थीं। इसमें सभी सम्मिलित वक्ताओं ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनकी आत्मिक शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की और भाटिया परिवार से इस वियोग को सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की गई। **-मंत्री**

डॉ. के.के. पसरीचा का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व वरिष्ठ उपप्रधान तथा पंजाब के पहले स्पेशलिस्ट डॉ.के.के. पसरीचा जी का दिनांक 30 सितम्बर 2015 को जालन्धर में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। डॉ. पसरीचा जी का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रति समर्पित रहा। वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार चलते हुए डॉ. पसरीचा ने अपने बच्चों को भी वैसे ही संस्कार दिए। डॉ. केके पसरीचा जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान पद पर रहते हुए सभा के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया। श्री पसरीचा जी के निधन से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। डा. केके पसरीचा जी का अन्तिम शोक दिवस 2 अक्तूबर को जालन्धर के जैन भवन में किया गया। इस अवसर पर पूरे पंजाब से आए हुए लोगों ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी तथा उपप्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा जी ने भी डॉ. केके पसरीचा जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने भी डॉ. पसरीचा जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया और दो मिनट के लिए मौन रखकर श्रद्धाजंलि दी। परमपिता परमात्मा पवित्र आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे तथा अपने चरणों में स्थान दे। **-महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब**

आर्य समाज मन्दिर सन्नौर में आंखों का मुफ्त चैकअप कैंप

आर्य समाज मन्दिर सनौर में आंखों का मुफ्त चैक-अप कैंप लाया गया। इस कैंप में ''हंस'' आंखों के हस्पताल के डायरैक्टर तथा चीफ-सर्जन डा. जसप्रीत सिंह हंस ने दो सौ से ज्यादा मरीज़ों की आंखों की जांच की। आए मरीजों की शूगर तथा ब्लड प्रैशर चैक किए गए। मरीजों को दवाईयां मुफ्त दी गईं। जिन मरीजों का आप्रेशन होने योग्य था। उनके आप्रेशन आम ईंटों से आधे रेटों में किए जाएंगे।

श्री राजेन्द्र वर्मा प्रधान ने डा. जसप्रीत सिंह हंस तथा उनकी पूरी टीम का कैंप के लिए समय देने हेतु धन्यवाद किया।

इस अवसर पर सर्वश्री सतीश कुमार बदरू मन्त्री, नरेश भाटिया खजानची, शंकर दास, प्यारा लाल, सुशील मेहता, अमित बदरू, अजय बदरू, महिन्द्र पाल बदरू तथा रवेन्द्र खन्ना आदि उपस्थित थे।

-मन्त्री आर्य समाज मन्दिर सनौर

कृष्णजन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया

आर्य समाज जीरा में कृष्ण जन्माष्टमी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें सभी आर्य परिवारों तथा बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस कार्यक्रम में सबसे पहले समाज के सुयोग्य पुरोहित श्री किशोर कुणाल जी शास्त्री ने बड़ी विधिपूर्वक हवन यज्ञ करवाया तथा बड़े सुन्दर ढंग से बाद में श्री कृष्ण जी के जीवन चरित्र पर वैदिक ढंग से सुन्दर प्रवचन दिया। इस के बाद आर्य समाज के वयोवृद्ध सदस्य श्री ओम प्रकाश ग्रोवर ने भी श्री कृष्ण जी के जन्म पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया था।

पण्डित वेद प्रकाश शास्त्री सम्मानित

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट लाजपत नगर, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 19 सितम्बर 2015 को पण्डित वेद प्रकाश शास्त्री फाजिल्का को उनके द्वारा समस्त जीवन किए गए वैदिक धर्म, सभ्यता, संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु वैदिक साहित्य के लेखन, प्रकाशन तथा वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका के माध्यम से प्राइमरी से कालेज स्तरीय पांच ग्रुपों में प्रतिवर्ष वैदिक ज्ञान परीक्षा, नर्सरी से दूसरी कक्षा तक पांच ग्रुपों में रंग भरो प्रतियोगिता, महर्षि दयानन्द चित्रकला, महर्षि दयानन्द बाल कॉमिक, वेद मन्त्रोच्चारण, सुलेख, पर्यावरणीय भाषण प्रतियोगिताएं, विभिन्न सामयिक विषयों पर विचार गोष्ठियों काआयोजन करके छात्र/छात्राओं में नैतिक, चारित्रिक, धार्मिक, उत्थान, राष्ट्रीय चेतना, कर्त्तव्यपरायणता, सद्भावना, शिष्टाचार, परोपकार आदि सद्गुणों के विकास एवं निखार हेतु अनवरत प्रयत्नशील रहने के कारण उन्हें ग्यारह हजार रुपए का चैक, शाल, प्रशस्तिपत्र आदि भेंट कर सम्मानित किया गया।

आर्ष गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली के अधिष्ठाता माननीय श्री स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए ''आर्यन अभिनन्दन समारोह'' में उपस्थित गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति डा. राम प्रकाश, सांसद श्री स्वामी सुमेधानन्द, श्री रामनाथ सहगल आदि महानुभावों ने शुभाशीष प्रदान करते हुए दीर्घायु एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु मंगल कामना प्रकट की।

श्री शास्त्री जी इससे पूर्व भी आर्य साहित्य पुरस्कार 2008, श्रेष्ठ आचार्य अवार्ड 2012, एन. एम. एफ. अवार्ड-2012, हिमालय और हिन्दुस्तान गौरव अवार्ड-2012 तथा विभिन्न पुस्तकों पर भी साहित्य सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त कर चुके हैं। आपकी अब तक 33 रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं।

आर्य समाज गांधीनगर-2 जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज गांधी नगर-2 का वार्षिक चुनाव दिनांक 27.9.2015 दिन रविवार को श्री राज कुमार प्रधान आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्री अमरनाथ जी को प्रधान चुना गया और शेष पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य मनोनीत का अधिकार उन्हें दे दिया गया। जिस पर उन्होंने निम्नलिखित महानुभावों को आर्य समाज का पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य मनोनीत किया। संरक्षक श्री बूटी राम, प्रधान सूबेदार अमरनाथ, वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुभाष भगत, उप प्रधान श्री कमल कुमार, श्री सुरजीत, महामंत्री श्री रविन्द्र कुमार, उप मंत्री श्री पुरूषोत्तम कुमार, कोषाध्यक्ष श्री तारा चंद, पुस्तकाध्यक्ष श्री रविन्द्र कुमार, बर्तन अध्यक्ष श्री कृष्ण लाल, श्री रोहित, स्टोर कीपर श्री अशोक कुमार, अन्तरंग सदस्य श्री सुरिन्द्र कुमार, श्री पुनीत, श्री रमेश कुमार, श्री संदीप कुमार, श्री रोहित, श्री अशोक कुमार, श्रीमती कृष्णा देवी, श्रीमती सुमित्रा देवी, शारदा कुमारी, प्यारी, श्रीमती वीरां देवी, रीटा कुमारी।

श्री नरेन्द्र सूद वैदिक सत्संग के प्रधान निर्वाचित

वैदिक सत्संग परिवार कल्याण समिति कपूरथला का त्रिवार्षिक चुनाव आचार्य देवराज जी की अध्यक्षता में रविवार 6 सितम्बर 2015 को सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्री नरेन्द्र कुमार जी सूद को प्रधान चुना गया और एक अन्य प्रस्ताव में उन्हें कार्यकारिणी का गठन करने का अधिकार दिया गया। उन्होंने निम्न अनुसार कार्यकारिणी का गठन किया। संरक्षक श्री दयाराम, वरिष्ठ उप प्रधान त्रियम्बक मोहन बाली, उप प्रधान मदन लाल तुली, बृजभूषण मुदगल, प्रिं.इन्द्रजीत नरेन्द्रा, महामंत्री श्री महेन्द्र पाल आर्य, कोषाध्यक्ष अजय चड्ढा, सहायक संध्या शर्मा, प्रचार मंत्री राजेश कुमार मेहता, कानूनी सलाहकार श्री राकेश पासी।

पंजाब में हिन्दी व संस्कृत को लुप्त नहीं होने देंगे : सुदर्शन शर्मा

दिनांक 4 अक्तूबर 2015 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि) चौक किशनपुरा जालन्धर की अन्तरंग सभा की एक आवश्यक बैठक सभा कार्यालय गुरूदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर में हुई जिसमें पंजाब भर से आए आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक में सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि वेद प्रचार के लिये पंजाब में विशाल प्रान्तीय सम्मेलन किया जाएगा जिसमें हिन्दी और संस्कृत की रक्षा के लिये एक आन्दोलन चलाया जाए। इस बैठक को सम्बोधित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि पंजाब में किसी भी भाषा को लुप्त नहीं होने दिया जायेगा। आर्य समाज पंजाब में हिन्दी और संस्कृत को बचाने के लिये हर संभव प्रयास करेगी। यदि इसके लिये आर्य समाज को कोई आन्दोलन करना पड़ा तो वह भी किया जायेगा। बैठक में यह भी निश्चय किया गया कि वेद प्रचार के लिये एक आवश्यक बैठक शीघ्र बुलाई जायेगी।

स्वामी सूर्यदेव जी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, उप प्रधान श्री सरदारी लाल, उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, देशबन्धु जी चोपडा, श्री पी.डी.गोयल, श्री प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा उप प्रधान, श्रीमती राजेश शर्मा जी उप प्रधान व अन्य।

इस अवसर पर गोनियाना मंडी से पधारे स्वामी सूर्यदेव जी को विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार एवं प्रसार करने के लिये सभा प्रधान जी द्वारा सम्मानित किया गया। स्वामी सूर्यदेव जी इंडोनेशिया मलेशिया, मारीशस व अन्य कई देशों में आर्य समाज व वेदों का प्रचार करके आए हैं। तपा से आए हुये सभा के सदस्य श्री सी.मारकंडा जी को उनकी पुस्तक के विमोचन के बाद सभा प्रधान जी ने सम्मानित किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, चौधरी ऋषिपाल सिंह, श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, श्रीमती राजेश शर्मा लुधियाना, श्री मुनीष सहगल जालन्धर, श्री रणजीत आर्य, श्री विपिन शर्मा, विजय साथी मोगा, श्री विजय सरीन, श्री वेद प्रकाश महिन्द्रु, श्री रातुल शर्मा, श्री सुधीर शर्मा सभा कोषाध्यक्ष, श्री देशबन्धु जी चोपडा फगवाडा, स्वामी सूर्यदेव जी गोनियाना मंडी, श्री पुरुषोत्तम शर्मा अमृतसर, सोहन लाल सेतिया अबोहर, अरुण सूद लुधियाना, श्री पी.डी गोयल बठिंडा, श्री सुदेश कुमार जालन्धर, श्री विनोद भारद्वाज नवांशहर, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल नवांशहर, श्री वेद आर्य जालन्धर, कैलाश नाथ भारद्वाज फगवाडा, सत्य प्रकाश उप्पल मोगा, श्री योगेश सूद मोरिण्डा, श्री नीरज कुमार मोगा, श्री भारत भूषण मेनन बरनाला, श्री सूर्य कान्त शोरी बरनाला, राजेन्द्र कौडा रायकोट, लव कुमार सूद सरहिन्द, मनोहर लाल आर्य लुधियाना, श्री सुरेन्द्र बजाज जालन्धर, यशपाल वालिया होशियारपुर विशेष रूप से पधारे। वेद प्रचार बढाने के लिये उसके उपायों पर विचार करने के लिये शीघ्र बैठक होगी।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली–6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।